हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैही व सल्लम ने फ़र्माया लइलातुल खदर के बरे में के वो सत्ताईसविं रात हैं. (सुनन अबू दाऊद, किताब नमाज़, बाब सत्ताईस के बरे में)

हज़रत मेहदी मौऊद अले० ने रमज़ान कि सत्ताईसविं रात को अल्लाह के हुकुम पर लइलातुल खदर हो ने का एलान किया.

हज़रत ज़िर से रिवयत है के मैं ने अबि बिन कअब रज़ी० से सुना ओर उन से कहा गया के अबदुल्लाह बिन मस्उद रज़ी० कहते हैं के जो साल भर तक जागे उस को शबे खदर मिलि. अबि रज़ी० ने कहा खसम है उस अल्लाह कि के उस के सिवा कोई मअबूद नहीं है के बेशक शबे खदर रमज़ान मैं है और वो खसम खाते थे और इन्शल्लाह नही कहते थे. मतलब ये के अपनि खसम पर यखिन था के सच्चि है और कहते थे के खसम है अल्लाह कि मैं खूब जन्ता हुं के वो कोन्सि रात है. वो वही रात है जिस मैं हम को रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैही व सल्लम ने जागने का हुकुम किया. वो वो रात है जिस कि सुभाह को सत्ताईसविं तारीख होति है और नशनि शबे खदर कि ये है के उस कि सुभाह को सुरज निकल्त है और उस मैं शुआ नहि होति. (सहिह मुस्लिम, किताब नमाज़, बाब शबे खदर मैं नमाज़ और सत्ताईसविं को शबे खदर हो ने के बयान मैं)

हज़रत अबुज़र रज़ी० से रिवायत है वो बयान करते हैं के हम ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैही व सल्लम कि सात रोज़े रक्खे. आप सल्ला० ने माहे रमज़ान मैं हमरे सात खियाम ना किया. जाब सात रातें बाखि रह गइं तो आप सल्ला० ने हमरे सात खियाम किया यहां तक के रात का तिस्रा हिस्सा चला गया जब छाटि रात थि तो आप सल्ला० ने हमरे खियाम ना किया. जब पाँचवि रात थि तो आप सल्ला० ने हमरे सात खियाम किया यहां तक के आधि रात चलि गई. मैं अरज़ किया, अए अल्लाह के रसुल सल्ला० काश आप हमरे सात बखि रात भि खियाम करें. आप सल्ला० ने फ़र्माया, बेशक ऐक शक्स जब इमाम के सात फ़र्ज़ नमाज़ अदा करता है यहां तक के इमाम (नमाज़ से) फ़ारिघ होता है तो उस के नामाए आमाल मैं रात के खियाम के सावाब साबित होजाता है. जब छोति रात हुई तो आप सल्ला० ने हमरे सात खियाम ना किया यहां तक के तीन रातें रह गईं. तीसरे शेष रात को आप सल्ला० अपने परिवार, अपनी पत्नियों और लोगों को इकट्ठा किया और हमारे साथ प्रार्थना की यहां तक के हमें डर महसुस हुआ के हम से फलह (सहरि) छुट न जाए. फिर बाखि महिना आप सल्ला० ने खियाम ना किया. (अबू दावुद, तिर्मिज़ि नसई, इबने माजा, मिशकात अल मसाबिह) (अबू दावुद, किताब नमाज़, बाब माहे रमज़ान (कि रातों) मैं खियाम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी० ने कहा कि रमजान कि 27 हो सकति है. उनका तर्क है के शब्द "लइलातुल खदर" नौ अरबी अक्षरों से मिलकर बनता है और यह तीन बार इस सुरे में है. इसलिए, यह 27 हो सकता है. (9x3=27)

हज़रत शेख अब्दुल खादर जिलानि रह०(470AH) का मानना है कि ये रात रमजान कि 27वीं रात है. उनका तर्क है कि सुरे खदर में 27 शब्द हैं "सलामुन..." से पहले तक.

"अल खदर" शब्द 3 स्थानो पर है, पहले 5वें स्थान पर, दूसरे 10वें स्थान पर और तीसरे 12वें स्थान पर, इन स्थानों को हम जोड़े तो 27 होते हैं. (5+10+12=27)